गर्व : आइआइएम के विद्यार्थी आदिवासी जीवन, समाज पर करेंगे शोध

आदिवासी समाज के उत्थान में मददगार होगा बिरसा मुंडा सेंटर फॉर ट्राइबल अफेयर : द्रौपदी

लाइफ रिपोर्टर @ रांची

आइआइएम रांची में बुधवार को बिरसा मुंडा सेंटर फॉर ट्राइबल अफेयर (बीएमसीटीए) की शुरुआत हुई. ऑनलाइन आयोजित कार्यक्रम में मुख्य अतिथि राज्यपाल द्रौपदी मुर्मू ने सेंटर के शुरुआत की घोषणा की. उन्होंने अपने संबोधन में कहा कि आइआइएम का बीएमसीटीए आनेवाले दिनों में आदिवासी समाज के उत्थान में सहयोगी होगा. यह न केवल आदिवासी समुदाय के बीच शैक्षणिक, सामाजिक व आर्थिक विकास में सहयोगी सिद्ध होगा. वहीं आइआइएम के विद्यार्थी इस केंद्र से जुड़ कर आदिवासी जीवन, समाज और उनकी विशिष्टता का अध्ययन कर शोध कर सकेंगे. केंद्र की ओर से आदिवासियों के बीच उद्यमिता की जानकारी साझा करने और प्रशिक्षण कार्यक्रम को संचालित करने से स्थानीय लोगों को बढ़ावा मिलेगा. राज्य के संसाधन आदिवासी विकास के लिए हमेशा प्रोत्साहित करते रहे हैं. जबकि आइआइएम का केंद्र अब आदिवासी समाज को मुख्यधारा से जोड़ कर लोगों को ज्ञान देने का काम करेगा. साथ ही आधुनिकीकरण के दौड़ में पारंपरिक ज्ञान और पद्धतियों का डाटाबेस बना कर उन्हें आनेवाली पीढ़ी तक पहुंचाने में मददगार साबित होगा.

आदिवासी समाज को उद्यमिता की जानकारी देना जरूरी : शैलेंद्र सिंह

आइआइएम के निदेशक प्रो शैलेंद्र सिंह ने कहा कि आइआइएम लगातार आदिवासियों के विकास में जुटा है. बीएमसीटीए भगवान बिरसा मुंडा के आदर्शों का अनुसरण करेगा. इससे आदिवासी समाज के मुद्दों को समझते हुए उनका हल निकाला जायेगा. आदिवासी समाज को उद्यमिता का प्रशिक्षण देते हुए रोजगार सृजन करने की कोशिश की जायेगी. साथ ही युवाओं को जल, जंगल, जमीन के मुद्दे से इतर व्यवसाय का प्रशिक्षण देते हुए आत्मनिर्भर भारत से जोड़ने का काम किया जायेगा. वहीं, शैक्षणिक स्तर पर आइआइएम के विद्यार्थी आदिवासी समाज के विभिन्न मुद्दों पर शोध करेंगे, जो आदिवासियों के विकास में सहयोगी साबित होगा.

आदिवासियों के विकास के लिए एकजुट होकर करेंगे काम

आयोजन के विशिष्ट अतिथि पद्मश्री अशोक भगत ने अपने संबोधन में लोगों को आदिवासी समाज से प्रेरणा लेते हुए उनके साथ मुख्यधारा से जुड़ने की बात कही. उन्होंने कहा कि बीएमसीटीए और विकास भारती बिशुनपुर अब एकजुट होकर राज्य के पलायन को रोकते हुए इन्हें दिशा देने का काम करेंगे. रांची यूनिवर्सिटी के वीसी डॉ रमेश कुमार पांडेय ने आदिवासी विकास के क्षेत्र में हर रूप से आइआइएम को सहयोग करने की बात कही. फ्रेंडस ऑफ ट्राइबल सोसाइटी मुंबई चैप्टर की उपाध्यक्ष नमिता पांड्या और फ्रेंडस ऑफ ट्राइबल सोसाइटी रांची चैप्टर की अध्यक्ष रेखा जैन ने भी अपनी बातें रखीं.

Prabhat Khabar, 25.02.2021, Pg. 08